वर्षा का पूर्वानुमानः अतीत के झरोखे से

अशोक कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक - स

पृथ्वी की स्थानीय वायुमंडलीय दशा ही मौसमी परिवर्तन का मुख्य कारण हैं, जिसे वहां की ठंड एवं गर्मी से अनुभव किया जा सकता है। इसे तय करने में वातावरण की नमी, सूर्य का प्रकाश, हवा की गति एवं तापमान की मुख्य भूमिका होती हैं। आज का मौसम विज्ञान अत्यन्त उन्नत अवस्था में पहुंच चुका है और आधुनिक संचार उपकरण, अंतरिक्ष में पृथ्वी की परिक्रमा करते उच्च तकनीक से परिपूर्ण उपग्रहों अनुप्रयोग द्वारा मौसमी परिवर्तनों की समझ की दिशा में बहुत तरक्की हो चुकी है । आज पहले की अपेक्षा मौसम का सटीक पूर्वानुमान लगाना आसान हो गया है । मौसमी घटकों में वर्षा का पूर्वानुमान लगाना सर्वदा से ही कौतुहल का विषय रहा है, और इस प्रक्रिया में चूक होती रही है, जिसे हर बार एतिहासिक प्रेक्षणों एवं आंकड़ों के आधार पर संशोधित किया जाता रहा है और आज भी यह उतना ही प्रासंगिक है । प्रस्तुत लेख में अतीत के वर्षा पूर्वानुमानों पर संकलित कुछ प्रसंग प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

कालांतर में हमारे देश के ऋषि-मुनि मौसम का अच्छा ज्ञान रखते थे। इसके लिए वे आकाशीय तारों एवं ग्रहों के प्रेक्षण का सहारा लिया करते थे, जो बाद में ज्योतिषीय ज्ञान के रुप में जाना गया । भारत में इस विषय पर वैदिक काल से ही ज्ञान का भंडार सुरक्षित है । वेदों में वर्णित कुल छः ऋतुओं (बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद,, हेमन्त एवं शिशिर) का प्रमाण मिलता है । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आकाश मंडल में तारों के कुल 28 मुख्य समूह हैं, जिन्हें नक्षत्रों [Constellation] के नाम से जाना जाता है। इन नक्षत्रों को इनकी प्रकृति के हिसाब से सात निम्न समूहों (नाड़ियों) में बांटा गया है ।

नाडी का नाम	नक्षत्रों के नाम			
चंदा (वात)	कृतिका	विशाखा	अनुराधा	भरणी
वायु (अतिवात)	रोहिनी	स्वाती	ज्येस्ठा	आश्वनी
अग्नि (दहन)	मृगशिरा	चित्रा	मूल	रेवती
सौम्य	आर्द्रा	हस्त	पूर्वाषाढ़	उत्तरा-भाद्रपद
नीर	पुनर्वसु	उत्तरा	उत्तरषाढ़	पूर्व-भाद्रपद
जल	पुष्य	पुर्वा	अभिजीत	शतभिषा
अमृत	अश्लेषा	मघा	श्रवण	घनिष्ठा

उपरोक्त नाड़ियों में 'वात' -वायुजनित मौसम के लिए उत्तरदायी है; 'अतिवात'- ठंड़, दहन -वायुमंडलीय ताप में वृद्धि; 'सौम्या',नीर और 'जल' तथा 'अमृत' नाडियां वर्षा उत्पत्ति हेतु उत्तरदायी होती हैं । इन नक्षत्रों में दो अथवा तीन के युग्म से 12 राशियों [Zodiac Sign](मेष, बृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन) बनती हैं, जिन्हें ज्योतिष कुंडली के 12 भावों (कोष्टकों) द्वारा प्रदर्षित की जाती हैं । स्थिति परिवर्तन के फ़लस्वरुप पृथ्वी का वायुमंडल, जलमंडल आदि प्रभावित होता हैं। ऋषि परासर की वर्षा पूर्वानुमान की तकनीक सूर्य तथा चंन्द्रमा की पास्स्परिक स्थिति पर निर्भर है, जिसे निम्न स्तंभ में दर्शाया गया है ।

सूर्य की राशियों में स्थिति	चंद्र की राशियों में स्थिति	संभावित वर्षभर की वर्षा (अधकास)
कर्क	मिथुन, मेष, बृष, अथवा मीन	100
सिंह अथवा धनु	मिथुन, मेष	50
कन्या अथवा सिंह	मिथुन, मेष,बृष अथवा मीन	80
कर्क, कुंभ, बृश्चिक अथवा तुला	मिथुन, मेष, बृष अथवा मीन	96

वार्षिक वर्षा तथा फ़सल की पैदावार को उक्त वर्ष के राजा ग्रह के ऊपर कैसे निर्भर करता है, यह नीचे दर्शाया गया है ।

किसी वर्ष का राजा ग्रह	उक्त वर्ष की अनुमानित वर्षा	ऊक्त वर्ष की अनुमानित फ़सल पैदावार
सूर्य	औसत अथवा छिट-फुट	खराब फ़सल की पैदावार (#)
चन्द्रमा	मूसलाधार वर्षा	अच्छी फ़सल की आवग
मंगल	छुट-पुट	फ़सल की हानि
बुद्ध	अच्छी	खूब अच्छी पैदावार
वृहस्पति	संतोषजनक	अच्छी पैदावार (#)
शुक्र	बहुत अच्छी	अनेकोम प्रकार की फ़सलों की अच्छी पैदावार
शनि *	छुट-पुट	खराब पैदावार

* शनि - पृथ्वी शुष्क तथा धूलभरी, वर्षभर लगातार वायु की तीव्रता रहे ।

(#) - सीजन के प्रथम दिन की वर्षा के आधार पर

भारतीय ज्योतिष-शास्त्र में प्रश्नकाल का बहुत महत्व है, इसको आधार मानकर, खुले आकाश दर्शन से एवं पशु पक्षियों के व्यवहार से उत्पन्न लक्षणों का अध्ययन करके वर्षा का पूर्वानुमान लगाने का कार्य हुआ है । ज्योतिष-शास्त्र में वर्षा के लम्बे अवधि के पुर्वानुमानों हेतु सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करे तो उस काल को आधार मानकर वर्षा की लग्न कुंडली बनाने का प्रचलन है। प्रचलित मान्यता के अनुसार मानसून की नियमित वर्षा प्रक्रिया यहीं से प्रारम्भ होती है । इस दिशा में आदि ऋषि वाराहमिहिर ऐसे प्रथम जल-विज्ञानी हैं, जिन्होंने वर्षा के पूर्वानुमान की दिशा में इतना महान कार्य किया, जिससे आज भी उन्हें सम्मान के साथ याद किया जाता है।

प्रश्न कुंडली ग्रहस्थिति अनुसार वर्षा का पूर्वानुमान

1. **प्रावृषिशीतकरा भृगुपुत्रात् सप्तम राशि गतः शुभदृष्टः।**
सूर्य सुतान्नवपंचमगो वा सप्तमगश्च जलाऽऽगमनाय ।।(बृ0सं 28/19)

यदि वर्षा काल में शुक्र के सप्तम राशि (180 अंशों पर) में स्थित होकर चंद्रमा शुभ ग्रह से दृश्य हो तो वर्षा द्वारा जल प्राप्ति का योग बनता है ।चन्द्रमा, शनि से पंचम (120 अंश), सप्तम (180 अंश) अथवा नवम (240अंश) में स्थित होकर शुभ ग्रहों से देखा जाय, तो वर्षा द्वारा जल का आगमन होता है।

2. **प्रायो ग्रहाणांमुदयास्त काले समागमे मंडल संक्रमेच।**
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चादद्राम् ।। (बृ0सं 28/20)

ग्रहों के उदय अथवा अस्त काल में यदि चंद्रमा की युति हो, इनके द्वारा मंडल में प्रवेश होने पर पक्ष के अंत में, सूर्य के दक्षिणायन (कर्क संक्रांति)- जब सूर्य कर्क रेखा को पार करता है; अथवा उत्तरायण (मकर संक्रांति) -जब सूर्य मकर राशि को पार करता है; एवं सूर्य के आर्दा नक्षत्र में स्थित होने पर निश्चय ही वर्षा होती है ।

3. **समागमे पतित जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञ जीवयोर्गरु सित्योगश्च संगमे ।**
यमारयोः पवनहुताशज भयं ह्यदृष्टयोरस हितयोश्च सदग्रहैः ।।(बृ0सं 28/21)

वर्ष कुंडली में यदि बुद्ध-शुक्र, बुद्ध-गुरु, गुरु-शुक्र और शनि-मंगल की युति हो तथा उस पर यदि किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो अथवा ऐसा योग न हो तो वायु अथवा अग्नि का भय होता है ।

4. **अग्रतः पृष्ठतोवापि ग्रहाः सुर्यावलम्बितः ।**
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकाण्ण्वामिव।।(बृ0सं 28/22)

यदि प्रश्नकुंडली में सूर्य से मन्द गति ग्रह आगे और शीघ्र गति ग्रह पीछे हों तो ऐसी दशा में पृथ्वी समुद्र की तरह जल से प्लावित हो जाती है । (यहां जल प्लावित का आशय अतिवृष्टि से है)

5. **पृच्छालग्ने चतुर्थस्थौ शनि राहु यदा पुनः।**
दुर्भिक्षं च महाघोरं तत्र वर्षे ध्रुवं भवेत्।।(वर्ष प्रबोध 13/1)

वर्षा का प्रश्न करने पर यदि प्रश्न लग्न के चौथे स्थान में शनि अथवा राहु का निवास हो तो उस वर्ष घोर अकाल का संकेत देता है ।

6. **सद्योवृष्टिकरःशुक्रो यदा बुध समीपगः।**
तयोर्मध्यगते भनों तदा वृष्टिविनाशनम्।।(नारद संहिता- 53/4)

प्रश्नकाल में यदि शुक्र बुद्ध के साथ हो तो वर्षा होती है तथा यदि शुक्र और बुद्ध के बीच सूर्य की उपस्थितिहो तो वर्षा का नाश हो जाता है।

आकाश दर्शन (प्रेक्षण) से उत्पन्न लक्षण के आधार पर वर्षा का पूर्वानुमान

आदि ऋषि-मुनियों ने आकाश दर्शन द्वारा मौसम के पूर्वानुमान लगाने के अनेकों तथ्य उजागर किए जो कालांतर में ग्रामीण भारतीयों के कृषि कार्य के लिए बहुत उपयोगी साबित हुए । इन्हें बृहत्संहिता में स्थान प्राप्त है । आइए इसके कुछ अंशों पर विचार करें, शायद उक्त उन दिनों के तथाकथित प्रेक्षण और वर्षा का पूर्वानुमान, आज के वातावरण के वावजूद उतने ही सटीक हों, जितना उस काल में रहा हो :-

1. **स्तनितं निशि विद्युतो दिवा रुधिर निभा यदि दण्डवत स्थिताः ।**
पवनः पुरतश्च शीतलो यदि सलिलस्य तदाऽऽगमो भवेत ।। (बृ0 सं0 28/12)

रात्रि के समय यदि बादल गरजता हो, तथा दिन में बिजली चमके और साथ -साथ पूर्व दिशा से ठंढी हवा चले तो शीघ्र वर्षा होने का संकेत हैं ।

2. **मयूरशुकचाष चातक समान वर्णा यदा जपाकुसुम पंकज द्युतिमुषच्च संध्याघनाः।**
जलोर्मिनगनक्र कच्छप वराहमीरोपमाःप्रभूत पुटसंचयानतु चिरेणयच्छनत्यपः।।(बृ0सं028/14)

आकाश में यदि बादल का रंग मोर, तोता, नीलकंठ पक्षी, चातक, कमल, जलभंवर, पर्वत, मगरमच्छ, कछुआ, सूअर अथवा मछली के रंग के समान हो तो यह शीघ्र वर्षा का संकेत है । (बृ0 सं0 28/14)

3. **पर्यन्तेषु सुधाश्शांक धवलामध्येण्जनालित्वषः स्निग्धानेकापुटाः क्षरज्जल्कणाः सोपान विच्छेदिनः।।**
माहेन्द्री प्रभवाःप्रयान्त्यपरतः प्राग्वाम्बु पाशोदभवाःये ते वारि मुचस्त्व्जनिति न चिरादेभ्यः प्रभूतं भुवि।।
(बृ0सं0 28/15)

यदि बादल का रंग चूना अथवा चंद्रमा के जैसा हो और इसके मध्य में काजल अथवा भौरों के समान काले निर्मल बादल जल की फ़ुहार छोड़ते हुए पूर्व से पश्चिम की ओर अग्रसर हों तो शीघ्र वर्षा होती है।यदि उक्त प्रकार के बादल पश्चिम दिशा में उत्पन्न होकर पूर्व की दिशा में जाय तो भी शीघ्र वर्षा होती है ।

4. **शक्रचाप परिधि प्रतिसूर्या रोहितोश्थ तडितः परिवेषः।**
उदगमास्तमये यदि भानोरादिशेत् प्रचुरमम्बुतदाशु ।। (बृ0 सं0 28/16)

सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय इन्द्रधनुष की परिधि यदि चन्द्रमंडल जैसा दिखाई दे तो शीघ्र वर्षा का योग बनता है ।

5. **यदि तित्तरपत्रनिभं गगनं मुदिता प्रवदिन्ति च पक्षिगणाः ।**
उदयास्तमये सवितुदद्यनिशं विसृजन्तिं घना न चिरेण जलम् ।। (बृ0 सं0 28/17)

वर्षा ऋतु में सूर्योदय के समय यदि पक्षी के पंख समान मेघ आकाश मंडल में छाया हो, मोर आदि पंक्षी आनन्दित होकर नृत्य करें तो शीघ्र वर्षा का योग होता है ।

6. **यद्यमोघ किरणाः सहस्त्रगोरस्तभूधकरा इवोच्छिताः।**
भूसमं च रसते यदाम्बुदस्तन्मद् भवति वृष्टि लक्षणम् ।। (बृ0 सं0 28/18)

यदि बादल पृथ्वी के निकट आकर गर्जन करें तथा सूर्य की रश्मियां फ़ैली नज़र आवें तो शीघ्र वर्षा /उत्तम वर्षा का योग होता है ।

पशु पक्षियों के व्यवहार परक लक्षणों द्वारा वर्षा का पूर्वानुमान

1. **विरसमुदकम् गोनेत्राभं वियद्विमला दिशा, लवणविकृतिः काकाण्डाभं यदा च भवेन्नमः।**
पवअनविगमःपोत्लूयन्तेझषाःस्थलगामिनो,रसन्मसकृन्मण्डूकानांजलागमहेतवः।। (बृ0सं028/4)

यदि वायु रुकी हुई हो तथा आकाश गौ नेत्र के समान निर्मल हो, नमक अपने आप गीला हो जाए,मछलियां बार-बार पानी से निकलकर अठखेलियां करती हों, मेढ़क लगातार टर्र-टर्र करते हों तो शीघ्र वर्षा होती है।

2. **मार्जरा भृशमवनिं नखर्लिखन्तो, लोहानां मलयनिचयः सवित्रगन्धः।**
रथ्यायां शिशुर्चिताश्च सेतुबन्ध्याः, सम्प्राप्तं जलमचिरान्निवेदयन्ति ।।(बृ0सं028/5)

यदि बिल्ली बार-बार अपने नाखून से जमीन खोदे, लौह धातुओं में कच्चे मांस की गंध आए और बच्चे रास्ते में पुल के निर्माण कर रहे हों, तो शीघ्र वर्षा होती है ।

3. **बिनोपधातेन पिपीलिकानामण्डोपसंक्रांन्तिरहिव्यवायः।**
द्रुगावरोहश्च भुजंगमानां वृष्टेर्निभित्तानि गवां प्लुतं च ।। (बृ0 सं0 28/7)

यदि बिन कारण चींटियां अपने अंडों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हुई दिखें अथवा दो सर्प आपस में लिपटे हुए दिखाई दें, सांप अकारण ही वृक्ष पर चढ़ने लगें अथवा गाय अकारण ही उछलने लगे अथवा मकलाने लगे तो निश्चय ही शीघ्र वर्षा होती है ।

4. **तरुशिखरोपगताः कृकलासा गगनतलस्थित दृष्टिनिपाताः।**
यदि चगवां रवि वीक्षण्मूर्धवं निपतितिवारि तदानचिरेण ।। (बृ0 सं0 28/8)

यदि गिरगिट वृक्ष के ऊपर चढ़कर ऊपर देखे तथा गाएं ऊपर की ओर देखें तो शीघ्र वर्षा होती है ।

5. **नेच्छन्ति विनिर्गमं गृहान्वन्ति श्रवणान् खुरानपि ।**
पशवः पशुबच्च कुक्कुरा यद्यम्भः पततीर्ती निर्दिशेत् ।। (बृ0 सं0 28/9)

यदि गौशाला में बंधे पशु ग़ौशाला के बाहर भीगने के डर से न जाए और कान, खुर तथा पांव हिलाते हों तो शीघ्र वर्षा होती है ।

6. **यदास्थिता गृहपटलेषु कुक्कुरा रुदन्तिवा यदि विततं वियन्मुखाः।**
दिवा तडिद्यदि च पिनाकि दिग भवा, तदाक्षमा भवि्त समैव वारिणी ।। (बृ0 सं0 28/10)

जब कुत्ता घर की छत पर चढ़कर आकाश की ओर देखे अथवा भौंके, अथवा पूर्व-उत्तर (ईशान कोंण) बिजली चमके तो अत्यधिक वर्षा होती है ।

7. **वल्लीनां गगन तलोन्मुखाः प्रवालाः, स्नायन्ते यदि जल पांशुभिर्विहंगा।**
सेवन्ते यदि च सरीस्त्रपास्तु णाग्राण्यासन्नो भवि्त तदाजलस्य पातः।। (बृ0 सं0 28/13)

यदि लताओं के नये पत्ते ऊपर की ओर उठाए हुए हों, पक्षियां धूल में स्नान करें, सरीसृप वृक्ष की अगली टहनियों पर अठखेलियां करें तो शीघ्र वर्षा होती है ।

आदि ग्रंथों में वाराहमिहिर रचित बृहत्संहिता, मेघगर्भ लक्षणाध्याय, भारतीय पंचांग, घाघ की कहावतों, डंक ऋषि की रचनाओं, माघ एवं फ़ोगसी संवादों, जनश्रुतियों एवं लोकोक्तियों की चर्चा है । भारत के ज्योतिष-शास्त्र के प्रणेताओं में बृहस्पति, नारद, परासर, कृतु, पुलह, पुलस्त्य, कश्यप, अत्री, अंगिरा, गर्ग, बशिष्ठ, मारिची, ब्रज, मय, बराहमिहिर, आदि का नाम प्रमुख है । कहते हैं कि वाराहमिहिर को ज्योतिष का बहुत अच्छा ज्ञान था । इनके द्वारा रचित बृहतसंहिता का काल (500-600 ई0) माना जाता है। एवं इसके द्वारा मानसूनी वर्षा का पूर्वानुमान लगाना संभव था । वाराहमिहिर की तकनीक द्वारा विभिन्न नक्षत्रों, राशियों में चांद की उपस्थिति के अनुसार ऋतु की अनुमानित वर्षा -एक नमूना

राशि			वर्षाऋतु की अनुमानित वर्षा	
चंद्रमा की स्थिति	संस्कृत/ देवनागरी नाम	अंग्रेजी	आदिकालीन मात्रक(ड्रोण) [1ड्रोण=6.4से0मी0]	आधुनिक मात्रक (से0मी0)
हस्त	कन्या	Virgo	16	102.4
पूर्वाषाढ़	धनु	Sagittarius	16	102.4
मृगशिरा	बृषभ	Taurus	16	102.4
चित्रा	कन्या	Virgo	16	102.4
रेवती	मीन	Pisces	16	102.4
घनिष्ठा	मकर	Capricorn	16	102.4
शतभिषा	कुंभ	Aquarius	4	25.6
ज्येष्ठा	बृश्चिक	Scorpio	4	25.6
स्वाती	तुला	Libra	4	25.6

कृतिका	बृष	Taurus	10	64.0
श्रवण	मकर	Capricorn	14	89.6
मघा	सिंह	Leo	14	89.6
अनुराधा	बृश्चिक	Scorpio	14	89.6
भरणी	मेष	Aries	14	89.6
मूल	धनु	Sagittarius	14	89.6
पूर्व-फ़ाल्गुनी	सिंह	Leo	25	160.0
पुनर्वसु	मिथुन	Gemini	20	128.0
विशाषा	बृश्चिक	Scorpio	20	128.0
उत्तराषाढ़	मकर	Capricorn	20	128.0
अश्लेषा	कर्क	Cancer	13	83.2
उत्तर-भाद्रपद	मीन	Pisces	25	160.0
उत्तरा-फ़ाल्गुनी	कन्या	Virgo	25	160.0
रोहिणी	बृष	Taurus	25	160.0
पूर्वभाद्रपद	कुंभ	Aquarius	15	96.0
पूष्य	कर्क	Cancer	15	96.0
अश्वनी	मेष	Aries	12	76.8
आर्द्रा	मिथुन	Gemini	18	115.2

उपरोक्त उदाहरण में दिए गए आंकड़ों के आधार पर कुछ शोधार्थियों ने बराहमिहिर के अनुसार वर्षा का विचलन गुणांक लगभग (37%) प्राप्त किया है, जो आज की गणनाओं के साथ मेल खाता है। वैसे प्रतिशत (%) विचलन गुणांक, लम्बे काल का जलवायु का औसत मान के इर्द-गिर्द पाया गया है । जैसे :भारतवर्ष का दक्षिण-पश्चिम मानसून की औसत वर्षा 85.24 से0मी0 और स्टैडर्ड विचलन का मान 8.47 से0मी0 है । विचलन का यह मान 130 वर्ष (1871-1990) के वर्षा प्रेक्षण के आकड़ों के औसत के अनुसार लगभग 10% का अंतर आता है। यह इस बात की पुष्टि करता है कि वैदिक (4000-3000 ई0पू0) कालीन वर्षा पूर्वानुमान के अनुसार थी । इन पूर्वानुमानों में संख्यात्मक की अपेक्षा गुणात्मक विवरण अधिक पाये जाते हैं। श्रीनिवासन (1976) द्वारा प्रकाशित एक समीक्षात्मक लेख में कौटिल्य ऋषि (400 ई0पू0) द्वारा रचित अर्थ-शास्त्र में वर्षामापी और वर्षा के क्षेत्रीय स्तर का वितरण मिलता है, जिसके अनुसार एक वन-क्षेत्र के एक हिस्से में 16 द्रोण वर्षा के अभिलेख दर्ज हैं, परन्तु अवन्ती, उज्जैन ($23^{0}11'$ N $75^{0}47'$E) में यह 23 द्रोण दर्ज है । यह क्षेत्र आज का IMD के डिविजन सं019 में पड़ता है, जिसका वर्षा ऋतु (जून-सितम्बर) का 100 वर्षों के अभिलेख के अनुसार औसतमान 86से0मी0 है। यदि इसमें तीन माह का औसत और जोड़ दें तो यह 91 से0 मी0 हो जाता है। यह संख्या औसत से थोड़ा ही अधिक है ।

पुराने समय में घाघ की कहावतों को ग्रामीण अंचल में कृषि कार्यो हेतु बहुतायत से प्रयोग किया जाता था। इसके साथ-2 स्थानीय लोकोक्तियों का भी बहुतायत से प्रयोग किया जाता था । ऐसा अनुमान है कि घाघ की कहावतें 1600 ई0 के अंत से प्रचलन में आईं । प्राचीन काल में वर्षा के संबंध में अनेकों श्लोक विद्यमान हैं। इसमें प्रमुख रुप से हिन्दी महीनों की तिथियों, वारों तथा ग्रहों की स्थिति, वर्ष की वर्षा प्रारम्भ के दिन के आधार पर पूर्वानुमान आदि मिलते हैं, जिसका यहां उल्लेख करने से आलेख बड़ा रुप ले लेगा । अत: यहां दिया जाना संभव नहीं है। उदाहरण स्वरुप - ज्येष्ठ मास के बारे में एक दोहा देखें:-

जिते दिन जो ज्येष्ठ में, पवन पुरवाई जोर ।
तेते दिन श्रावण लखो, वर्षा नहीं निचोर ।।

जितने दिन ज्येष्ठ मास में पुरवाई (पूर्वी हवा -पूरब से पश्चिम की ओर) चलेगी । उतनें ही दिन श्रावण मास में वर्षा नहीं होगी। आगे और देखें

जेठ मास को तपे निराशा, तो जानों बरखा की आसा ।

यदि ज्येष्ठ मास अधिक तपे तो समझो कि अषाढ़ मास में अच्छी वर्षा होगी ।

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में विद्वानों ने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया था। इस विषय पर उन लोगों का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक है। सभी लक्षण शहरी / नगरीय परिवेश में दिखाई नहीं देते परन्तु कुछ दिखाई देते हैं। जैसे-आकाश का रंग, सूर्य, हवा, पालतु कुत्तों, तथा पछियों की चेष्टाएं, उद्यानों में जाकर वनस्पतियों का निरीक्षण इत्यादि। ऐसी मान्यता है कि पशु - पछियों में अतियेन्द्रीय ज्ञान होता है, जिससे वे भूकम्प तक का पूर्वाभास दे देते हैं। ऋषि परासर के अनुसार वर्षा का पूर्वानुमान निम्न तरह से है:-

बलवस्तु महद्वष्मल्पेष्ल्पाम्बुशीकरम् ।
मध्येषु मध्यमम् ब्रूयान्निगित्तेषु निमित्त्वत् ।।

यथा, पूर्व कथित लक्षण यदि बलवान है तो अधिक वर्षा, मध्यम है तो मध्यम वर्षा और अल्प है तो अल्प वर्षा होगी, अर्थात् निमित्त के अनुरुप वर्षा होनी समझें ।

नोट: यहां शीघ्र वर्षा से तात्पर्य (short range prediction 24 से 28) घंटे पूर्व वर्षा से है ।